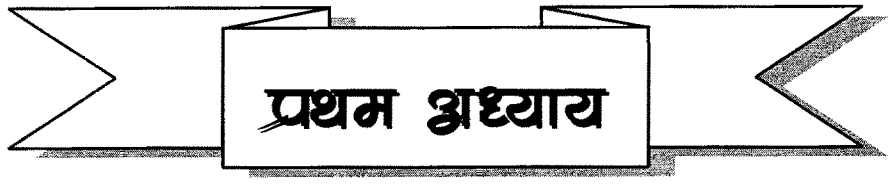

प्रथम अध्याय

मोहनदास नैमिशराय :
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

"मोहनदास नैमिशराय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

❖ **प्रास्ताविक :**

किसी भी साहित्यकार पर अनुसंधान करने के लिए उसके व्यक्तित्व को जानना बहुत जरूरी है | क्योंकि उसके व्यक्तित्व की पहचान उसके साहित्य से मिलती है | साहित्यकार जिस परिवेश में जन्म लेता है उस परिवेश का प्रभाव स्वाभाविक रूप से उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर होता है | इसलिए साहित्यकार के नाहित्य में उसका अपना जीवनानुभव परिलक्षित होता है | डॉ.सरोज मार्कण्डेय के अनुसार - "किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएवं व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है | व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचायक नहीं अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं, मानसिक, सांस्कृतिक पूँजीभूत रूप है |"[१]

मोहनदास नैमिशराय स्वयं दलित होने के कारण उनके उपन्यासों में दलित जीवन परिलक्षित होता है | खुद दलित होने के कारण दलित जीवन-व्यथा, समस्याएँ एवं चेतना का प्रामाणिक चित्रण मोहनदास नैमिशराय को संभव हो गया है | उन्होंने अपनी संवेदनात्मक प्रक्रियाएँ तथा अनुभूति के उस स्तर को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया, जहाँ उनकी वैयक्तिकता का परिबोधन करके सामाजिक स्तर पर स्वीकृति के योग्य हो सके | उनके उपन्यासों में दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभव मौजूद है, जो एक ऐसे यथार्थ से साक्षात्कार कराती है, जहाँ हजारों साल की पीड़ा अंधेरे कोनों में दुबकी पड़ी है | उनके उपन्यास शुद्ध सैधांतिक मतों के आवर्त से निकलकर सीधे दलित आदमी के अनुभव जगत में ले जाते हैं |

चमार जाति में जन्मे मोहनदास नैमिशराय जी ने बचपन में बहुत कुछ सहा है | उनका बचपन पूरी तरह से अभावों में बीता है | बचपन में उन्हें पल-पल अपमानित होना पड़ता था, इस कारण उनका बाल-मन द्रवित हो उठता था | बाद में दलितों की समस्याएँ और उनपर होते अन्याय के प्रति उनकी लेखनी कभी चुप नहीं बैठी | उनके उपन्यासों में दलितों का जीवन

---

१. डॉ.सरोज मार्कण्डेय - निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ, पृष्ठ क्र. 12

संघर्ष और उनकी बैचेनी के जीवंत दस्तावेज है | उनका साहित्य मानवतावाद, जातीयता का विनाश, उदात्त आदर्श भाव तथा आदर्श जीवन की माँग करता है |

"अपने-अपने पिंजरे भाग - 1, 2" जैसी उनकी आत्मकथा पढ़ने पर ऐसा लगता है कि नैमिशराय जी ने जिस तरह का जीवन जीया है उसके मुकाबले हम कुछ भी नहीं | उनके जीवन के विविध पहलुओं को शब्दों में समेटना आसान नहीं है | फिर भी उनकी साहित्य कृतियों को समझ लेने के लिए उनके व्यक्तिगत जीवन को देखना जरूरी है | इसी उद्देश्य से यहाँ उनके व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत है |

1.1 व्यक्तित्व :

किसी लेखक के व्यक्तित्व को जानना बहुत ही उत्कंठापूर्ण बात होती है | लेखक का परिवार, उनका बचपन, शैक्षिक जीवन, अंतरंग व्यक्तित्व, अभिरूचि तथा साहित्यिक जीवन आदि के बारे में प्राप्त जानकारी का लेखा-जोखा यहाँ पर प्रस्तुत है |

1.1.1. जन्म :

मोहनदास नैमिशराय जी का जन्म एक गरीब परिवार में चमार जाति में हुआ | हिंदी साहित्य जगत में अछूते क्षेत्रों पर साहेत्य का सृजन करनेवाले एक दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय जी का जन्म 5 सितंबर, 1947 में उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में हुआ |

1.1.2. परिवार :

वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार मोहनदास नैमिशराय जी के पिताजी सूर्यकांतजी सरकारी नौकरी में थे | वे बड़ी हवेली में रहते थे | लेखक की माँ बचपन में ही गुजर गयी थी | माँ की मृत्यु के बाद पिताजी ने दूसरी शादी की | आपकी सौतेली माँ को दो लड़कियाँ और एक लड़का था आपके तीन नाना-नानियाँ थीं | ताई माँ के साथ रामप्रसाद (ताऊजी) कच्चे घर में रहते थे | ताऊजी नगरपालिका के सदस्य रहे हैं | उन्हें दो लड़के थे | ताई माँ ने आपको गोद लिया था | उनके ही शब्दों में - "माँ की मृत्यु मेरे लिए दुखर घटना थी, पर ताई माँ का गोद लेना सुखद भी |"[1] दूसरे चाचा के परिवार में पाँच लड़के तथा एक बेटी थी | आपको बड़े भाई जानकी

1. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे (भाग-1), पृष्ठ क्र. 13

प्रसाद, मदन गोपाल, मोतीलाल, ताराचंद राय नामक चार भाई एवं इंदिरा, कौशल्या और गीता नामक तीन बहनें थीं |

बड़े भाई जानकीप्रसाद का ब्याह रमेश नामक लड़की से हुआ था | जानकीप्रसाद में खोट थी | जिस कारण रिश्ता टूट गया मदनगोपाल और मोतिलाल बी.ए. कर सरकारी नौकरी में आ गए | ताराचंद राय एन.टी.सी. के अंतर्गत कानपुर के म्योर कॉटन मिल में मैनेजर रहे | स्वयं आपकी पत्नी आज एम.टी.एन.एल. में सुपरवाइजर है | आपकी बेटी एअर हास्टेस का डिप्लोमा कर नौकरी में है | परिवार का धीरे-धीरे विस्तार हुआ है | तथा परिवार में स्थित अन्य लड़कियाँ, वहुएँ आदि नौकरीशुदा हैं |

1.1.3 माता-पिता :

1.1.3.1. माता :

आपके जन्म के कुछ ही बरस बाद माँ चल वसी | इस कारण आप बचपन से ही विन माँ के अभागी रहे हैं | लेकिन ताई नाँ ने आपको गोद में लिया था | ताई माँ का ममताभरा प्यार खुव मिलता रहा | फिर भी अपनी माँ का अभाव, उसके प्रति जिज्ञासा भाव मन में सदैव रहता था | ताई माँ ने माँ बनकर वह स्थान लिया था | उसने अपनी छाती से दूध पिलाकर माँ के अभाव की पूर्ति की थी | नैमिशराय जी अप्नी आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' में लिखते हैं - "ताई की छातियों में दूध था और सीने के भीतर ममता का छलकता, हिलोरे मारता समंदर |"[1] ताई माँ मुझे खुव प्यार करती | उसने माँ की कमी कभी महसुस नहीं होने दी | इस तरह मोहनदास नैमिशराय बचपन से ही मातृप्रेम से वंचित रहे |

1.1.3.2. पिता :

लेखक के पिताजी का नाम सूर्यकांत जी था | आपके पिताजी मिलिटरी में नौकरी में थे | लेखक से वे खुव प्यार करते थे | वे वड़ी हवेली में (बड़े मकान) रहते थे | उन्होंने 1940 के आसपास हाईस्कूल किया, घर से दूरी पर | लगभग सात किलोमीटर आना और फिर उतना ही वापस जाना | चौदह किलोमीटर की यात्रा वे साईकिल से करते थे आपके पिता के पाँच लड़के

1. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे (भाग-1), पृष्ठ क्र.13

और तीन लड़कियाँ थी | लेकिन माँ की मृत्यु के बाद पिताजी ने दूसरी शादी की | उस परिवार में सौतेली माँ, उनकी दो लड़कियाँ और एक लड़का था | पिताजी नाटक लिखते थे | इसलिए उत्तर प्रदेश स्तर पर डिप्रेस्ड लीग के अध्यक्ष रहे हैं, तथा बिजनेस ग्रुप के चेअरमन भी रहे हैं | कुल मिलाकर पिता और उनका परिवार सुखासिन अवस्था में था |

1.1.4. बचपन :

बचपन में अभाव के साथ विषमता, संताप रहे है, तो समाज में भी | परिवार से बाहर समाज, लेकिन समाज से बाहर क्या ? इस तरह घर और बाहर दोनों परिवेश में छटपटाहट रही, वेदना रही, तकलीफ रही | अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं, "मेरा बचपन कुछ विषम परिस्थितियों में बीता |"[1] आपके जन्म के कुछ वर्ष बाद ही माँ चल बसी | आपको अपनी माँ का अभाव सदैव महसूस हुआ है | बचपन में विशेष कपड़े पहनने को नहीं मिलते थे | बिना चप्पल के जाना पड़ता था | गरीबी तो काफी रही लेकिन गरीबी ऐसी कि जो याद आनेवाली | हालाँकि सभी से आप को प्यार मिलता रहा | वह प्यार से अधिक सहानुभूति थी | लेकिन ताई माँ से बहुत प्यार मिलता रहा | ताई माँ के साथ रामप्रसाद जी (ताऊजी) का प्यार मिला, पिताजी का प्यार मिला | बड़े भाई जानकीप्रसाद, मदनगोपाल, मोतिलाल, ताराचंद राय के साथ इंदिरा, कौशल्या तथा गीता आदि बहनों का सानिध्य प्राप्त हुआ | आपने बचपन में चप्पल की दुकान पर काम किया है | आपके मित्र बहुत रहे है | मेरठ में सुभद्रा, मंगो, बिरजो, रसवंती, सौभाग्यवती आदि-आदि मित्र रहे हैं | जिनके साथ सोलह बरस तक आँख मिचौली का खेल खेलते थे |

आठवीं कक्षा के बाद आप के शरीर पर जवानी की रेखाएँ उभरने आरंभ हुई थी | कुछ नयी बातें आपसे जुड़नी लगी थी | उस समय रसवंती आपके जीवन में आई थी | लेकिन घर का विरोध होता रहा | रसवंती के बिना मन नहीं लगता था | वह मेरठ की पहली और अंतिम प्रेमिका थी | आपके मन के भीतर प्रेम का बीज पड़ चुका था | बाद में वहीं पौधा बनकर उगा | आप उससे शादी करना चाहते थे | लेकिन घरवालों ने उसकी शादी तय कर दी | इस कारण आप

---

1. मोहनदास नैमिशराय - परिशिष्ट 1 से उधृत

भागकर मेरठ से मुम्बई चले आए | मुम्बई के चाचा हररोज शराव पीते थे | आप चाचा के साथ जाते थे | उस समय आपको शराब मालिक की लड़की सूजी से प्रेम हुआ | लेकिन ताऊजी का खत आने के कारण मेरठ लौटना पड़ा | इस कारण सूजी के साथ लेखक का प्रेम ज्यादा दिनों तक नहीं रहा |

1.1.5. शिक्षा :

मोहनदास नैमिशराय का जन्म दलित परिवार में होने के कारण बहुत-सी समस्याओं से जूझना पड़ा | लेकिन आपकी शिक्षा के प्रति बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धिमत्ता परिलक्षित होती है | आपकी प्राथमिक शिक्षा वेसिक प्राइमरी पाठशाला में हुई | वह "चमारों का स्कूल" नाम से प्रसिद्ध था | आपने वहाँ पाँचवीं तक शिक्षा पूरी की है | वहाँ अध्यापक से लेकर बच्चे भी आपको 'चमार' कहकर पुकारते थे | आप ने पाँचवीं कक्षा पास कर सरदार पटेल म्यूनिसिपल हायर सेकंड़री स्कूल में दाखिला किया | वहाँ भी सवर्ण अध्यापक के जुल्म एवं प्रताड़ना को सहना पड़ा | उसके बाद देवनागरी इंटर कालेज में अंग्रेजी में बी.ए. किया | एम.ए. पूर्ण करने के बाद मेरठ में ही बी.एड. किया | आपका हिंदी, मराठी, अंग्रेजी भाषा पर प्रभुत्व है | नैमिशराय जी ने ऐसी विपरित परिस्थितियों में भी उच्च शिक्षा को हासिल किया |

1.1.6. नौकरी :

आपको जीवन में सदैव संघर्ष करना पड़ा है | आपने सबसे पहले होमगार्ड में नौकरी की है | लेकिन आप सदैव ऊँची ख्वाहीश रखते थें | आपने कुछ प्रयास करने के बाद एम्प्लायमेंट एक्सचेंज दिल्ली में नौकरी हासील की | उस समय हररोज मेरठ से दिल्ली तक रेल से भागदौड करनी पड़ती थी | एम.ए. पूर्ण करने के बाद आपने मेरठ में ही बी.एड. किया | अध्यापक का प्रमाणपत्र मिलने पर जूनियर हाईस्कूल मथुरापुर में काम किया | उस समय आपको दो सौ रूपये तनख्वाह मिलती थी | ताऊजी को इच्छा थी कि आप कोई प्रशासकीय नौकरी करें | इस कारण आप प्रशासकीय परीक्षा देते रहे | कुछ प्रयास करने के वाद आप केंटोनमेंट बोर्ड मेरठ में टोकन इन्स्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए | लेकिन आपने तीन-चार माह काम करने के बाद अपना इस्तीफा दे दिया | तथा सी.ए.वी. इंटर कालेज में लेक्चरशिप ग्रहण की | उसी दौरान आपका

बहुजन समाज पार्टी (बामसेफ) से संपर्क आया | उनके विचारों से प्रेरित होकर एक सामाजिक कार्यकर्ता होने का अजीब-सा नशा आपके मन में उमड़ आया | इस कारण आपने लेक्चरशिप का इस्तीफा दे दिया | उनके ही शब्दों में, "बदले में फुल टाईम सोशल वर्कर से लेकर संपादक बन गया था |"[१] उसके बाद आप अनेक पत्रिकाओं से जूड़े रहे | पिछले कुछ वर्ष से आप सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत डॉ. अम्बेड़कर प्रतिष्ठान में मुख्य संपादक रहे हैं | लेकिन पिछले वर्ष इस संपादक की नौकरी से इस्तीफ दे दिया या उन्होंने आपको हटाया | उनके ही शब्दों में, "यह मेरी सोलहवीं नौकरी थी |"[२] इसके बाद आपने नौकरी न करने की कसम खाई है और बयान पत्रिका आरंभ की है |

1.1.7. रहन-सहन तथा खानपान :

आपको सदैव सीधा-सादा जीवन व्यतीत करना अच्छा लगता है | आप पोशाख सदैव सीधा-सरल पहनते है | आपको मांसाहारी खाना बहुत अच्छा लगता है | आपको बचपन से ही ड़ायरी लिखने तथा उपन्यास पढ़ने की आदत है | आप पतंग उड़ाने में और फूटबॉल खोलने में अधिक रूचि रखते है | आप खाना बनाने मे भी कुशाग्र है | होमगार्ड़ में काम करने से आपको राइफल चलाने की भी आदत है | आपने डॉ. अम्बेड़कर, बी. पी. मौर्य आदि के विचारों को बहुत सुना है | तथा आप रामविलास पासवान, कशिराम, मायावती आदि के संपर्क में रहे हैं | जिसके प्रभाव स्वरूप सामाजिक कार्य करने का अजीब-सा नशा है |

1.1.8. विवाह तथा संतान :

आप ज्यूनिअर हाइस्कूल मथुरापुर में अध्यापक रूप में कार्यरत थे | उसी बीच विवाह के अनेक प्रस्ताव आने लगे थे | अंत में आगरा के लेबर इन्स्पेक्टर की लड़की से शादी तय हो गयी | उसका नाम शकुन था | वह जीवन में सदैव आपकी सहचारिनी रही | उसने सदैव आपके साथ जीवन का संघर्ष किया है | अब वह एन. टी. एन. एल. में सुपरवाइजर है | आपको बंटी और मनीष (मन्नू) दो बेटे हैं | उनमें से मनीष कुछ साल में ही गुजर गया | आपको एक लड़की

1. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे (भाग-2), पृष्ठ क्र. 147
2. परिशिष्ट - 1 से उदधृत

भी है | उसे आपने एअर हास्टेस का डिप्लोमा कराया है | अब वह नौकरी में है |

1.1.9. जीवन के प्रति दृष्टिकोन :

आप के विचार से जीवन एक बार ही मिलता है | इसलिए उस जीवन में मनुष्य को समाज के लिए कुछ विशेष करना चाहिए | ऐसा विशेष जिससे आनेवाली पीढ़ी को राहत मिले | उन्हें अंधेरे में भटकना न पड़ें | परिवार से अन्य व्यक्ति की जिम्मेदारी होती है | जिसको उसे निभाना चाहिए | "ज्योतिबा फुले, डॉ.अम्बेड़कर, नेल्सन मंड़ेला, डॉ.लोहिया तथा गांधी ने जो पथ निर्माण किया, उसे आगे तक ले जाना चाहिए |"[1] जाति, धर्म तथा वर्ग से ऊपर उठकर समस्त मानव जाति की सेवा के लिए आगे आना चाहिए | यही जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोन है | अपने जीवन से अधिक दूसरों के जीवन, अस्मिता, मान-सम्मान को समझना चाहिए | भगवान बुद्ध का दर्शन "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" अपनाना चाहिए |

---

1. मोहनदास नैमिशराय - परिशिष्ट 1 से उदधृत

1.2. कृतित्व :

साहित्यकार अपने स्वानुभव को कल्पना में ढ़ालकर उसे नया रूप प्रदान करता है | अनुभव की दास्तान से ही साहित्य का सृजन होता है | दलित लेखकों का साहित्य स्वानुभूतीपरक एवं यथार्थपरक लिखा गया है | तो गैर दलित लेखकों का साहित्य करूणा एवं सहानुभूतिपरक लिखा गया है | वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार मोहनदास नैमिशराय जी का साहित्य आत्मानुभव की उपज है | उनकी रचनाओं में व्यक्त यथार्थ जीवन का चित्रण है | उनके रचना संसार में उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य, आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य साहित्य शामिल हैं |

आप का बचपन पूरी तरह से अभावग्रस्त रहा है | आप बहुत सारे सवालों से जूझते रहे हैं | आप में जिज्ञासाएँ उभरती रहो | आपके परिवार में शिक्षित सदस्य भी थे | मेरठ शहर शिक्षा तथा साहित्य में आगे था | आप खुद लिखते हैं- "दस बरस की उम्र में उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता पढ़ने की लत लगी |"[1] आपने लगभग बारह बरस में कविता, कहानी, उपन्यास लिखना आरंभ किया | स्कूल की स्मारिका के लिए, स्थानिय अखबार के लिए और मेरठ से प्रकाशित भीम सैनिक के लिए लिखते रहे | सन 1968 में मुम्बई जाने पर (सोलह वर्ष की उम्र में) पहली कविता लिखी | समंदर के किनारे फुटपाथ पर पड़े आदमी को देखकर मुम्बई नगर की स्थिति का जायजा किया और वहीं बैठकर आपने अंग्रेजी में पहली कविता लिखी |

"ऐ मेन
लाइंग ऑन द रोड
पीपुल कम, सी ॲण्ड गो अवे
व्हिद आउट टेकिंग एनी थिंग
ऐ मेन लाइंग ऑन द रोड.....
डॉग्स कम, सी, स्मैल एंड गो अवे
विद आउट टेकिंग एनी थिंग
ऐ मेन लाइंग ऑन द रोड.....

---

1. मोहनदास नैमिशराय - परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

फ्लाइज कम, सी एंड ड्रॉप

ए लॉट ऑफ स्लम

आन द डैड बोडी

ऐ मेन लाइंग ऑन द रोड....."[१]

आपको दलितों पर होनेवाले जुल्म और अत्याचार को वाणी देने के लिए लेखन की प्रेरणा मिली है | आप पर डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर, बी.बी.मौर्य, बाबू जगजीवन राम, मानसिंह वर्मा, रेवतीशरण मौर्य, झगड़ सिंह आदि का प्रभाव रहा है | आप उस समय का सर्वाधिक चर्चीत अख्बार "ब्लिट्ज" नियमित पढ़ते थे आप में बचपन से ही दलित आंदोलन रच-बस गया था | आपकी रचनाएँ बहुमुखी है | "हॅलो कॉमरेड" नाटक का मंचन भी कई बार हुआ है | देवदासी समाज तथा उत्पीड़न पर "आज बाजार बंद है" उपन्यास है | काल गर्ल पर "क्या मुझे खरीदोंगे?" उपन्यास है | यह महिला के भीतर उठते हाहाकार को रेखांकित करता है | उसकी अस्मिता, पहचान, अस्तित्व बचाकर रखने की इच्छाशक्ति, महानगरीय जीवन की विषमता आदि को इसमें दर्शाया गया है | "मुक्तिपर्व" तथा "वीरांगना झलकारी बाई" उपन्यासों में दलितों को न्याय देने का प्रयास किया है | आपके अनुसार "मेरी सभी रचनाएँ समाज के भीतर के यथार्थ को उकेरती है |"[२] इस कारण हिंदी दलित साहित्य में जितने नाम हमारे सामने आते हैं उनमें शीर्षस्थ मोहनदास नैमिशराय जी का नाम अनिवार्य रूप में सामने आता है | अपनी रचनाशक्ति के बल पर ही अल्पावधि में आप प्रसिद्ध हो गए है |

---

1. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे (भाग-1), पृष्ठ क्र.137
2. मोहनदास नैमिशराय - परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

❖ **मोहनदास नैमिशराय जी का उपलब्ध साहित्य :**

क्र.सं.	प्रकाशित कृतियाँ	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष	संस्करण
1.2.1. उपन्यास				
1.	क्या मुझे खरीदोगे?	अमीबा प्रकाशन वी 73 शशी गार्डन, पटपड़गंज, नई दिल्ली - 110092	1990	प्रथम
2.	मुक्तिपर्व	प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।	1999 2002	प्रथम द्वितीय
3.	वीरांगना झलकारी बाई (ऐतिहासिक उपन्यास)	राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।	2003 2005	प्रथम द्वितीय
4.	आज बाजार बंद है	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।	2004 2006	प्रथम द्वितीय
1.2.2. कहानी				
1.	आवाजें	समता प्रकाशन, विश्वास नगर, दिल्ली - 32।	1998 2002	प्रथम द्वितीय
2.	हमारा जवाब	नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली।	2005	प्रथम
1.2.3. नाटक				
1.	अदालतनामा	दलित साहित्य प्रकाशन चेम्बर नं.67, पटियाला हाऊस कोर्ट, नई दिल्ली - 110001।	1996	प्रथम
2.	हैलो कामरेड़	सवस्ट फाउंड़ेशन	2001	प्रथम

		224-ए, रजोकरी पहाड़ी, नई दिल्ली - 110038 |		
3.	हिंदी रेड़िओ नाटक (सत्ताईस)	नटराज प्रकाशन, ए-507 /12, साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली - 110053 |	2004	प्रथम
1.2.4. काव्य				
1.	आग और आंदोलन	सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लब रोड, पश्चिमपुरी चौक नई दिल्ली |	2000	प्रथम
1.2.5. आत्मकथा				
1.	अपने अपने पिंजरे (भाग-1)	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |	1995 1996	प्रथम द्वितीय
2.	अपने अपने पिंजरे (भाग-2)	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |	2002	प्रथम
1.2.6. जीवनी				
1.	भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेड़कर (सचित्र जीवनी)	जयभीम प्रकाशन बी. जी. 5ए/30बी,पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 1100063 | नीलम पब्लिसिंग हाऊस रामदास पेठ, नागपुर-10 | समता प्रकाशन 30/64 विश्वास नगर, दिल्ली -32 |	1990 1991 1991	प्रथम द्वितीय तृतीय

		सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लब रोड़, पश्चिमपुरी चौक, नई दिल्ली - 63	1998	चतुर्थ
2.	बाबासाहब ने कहा था	आनंद साहित्य सिद्धार्थ मार्ग, छावनी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	1991 1992 1995 2001	प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ
3.	डॉ. अम्बेड़कर और उनके संस्मरण	संगीता प्रकाशन 30/54, विश्वास नगर, गली नं. 8, दिल्ली - 32	1992	प्रथम
4.	वीरांगना झलकारी बाई (जीवनपरिचय), (ऐतिहासिक जीवनी)	सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लब रोड, पश्चिमपुरी चौक, नई दिल्ली	2000	प्रथम
1.2.7. अन्य साहित्य				
1.2.7.1. वैचारिक ग्रंथ				
1.	विरोधियों के चक्रव्यूह में डॉ. अम्बेड़कर	निलकंठ प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली	1997	प्रथम
2.	बहुजन समाज	प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली	2002	प्रथम
3.	स्वतंत्रता संग्राम के दलित क्रांतिकारी	प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली	1999	प्रथम
4.	भारतीय दलित आंदोलन एक संक्षिप्त इतिहास	बुक्स फॉर चेंज सी-75, साउथ एक्सटेंशन-II, नई दिल्ली - 110049	2004 2005	प्रथम द्वितीय

1.2.7.2. शोध ग्रंथ				
1.	उजाले की ओर बढ़ते कदम (मंद बुद्धि बच्चों पर विशेष)	किताब महल डिस्ट्रीब्यूटर्स, 28, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली |	1998	प्रथम
1.2.7.3. संपादित साहित्य				
1.	सफदर एक बयान (काव्यसंग्रह)	मानव विकास प्रिंटर्स 17/591, थान सिंह नगर आनंद पर्वत, नई दिल्ली |	1989	प्रथम
1.2.7.4. बाल साहित्य				
1.	पूर्वोदय बुद्ध विहार	सम्यक प्रकाशन, 32À3, क्लब रोड, पश्चिमपुरी चौक नई दिल्ली |	2002	प्रथम
1.2.7.5. संकलित साहित्य				
1.	समता की ओर	प्रकाशन विभाग (भारत सरकार), पटियाला हाऊस, नई दिल्ली |	1993 2001	प्रथम द्वितीय
1.2.7.6. अनुदित साहित्य				
1.	हिंदुत्व का दर्शन	आनंद साहित्य सदन अलीगढ़, छावनी (उ.प्र)|	1991 1996	प्रथम द्वितीय
2.	डॉ.अम्बेड़कर और कश्मीर स्मस्या	संकेत प्रकाशन, 128, शिवाजी नगर, नागपुर |	1997	प्रथम
3.	भारत के अग्रणी समाज सुधारक	सेंच्युरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली |	2002	प्रथम

1.2.7.7. अंग्रेजी साहित्य				
1.	कास्ट एण्ड रेस कम्पेरिटिव स्टडी आफ अम्बेड़कर एण्ड मार्टिन ल्युथर किंग	रावत प्रकाशन, जवाहर नगर, जयपुर - 4	2003	प्रथम

1.2.8. पुरस्कार :

1. डॉ. अम्बेड़कर स्मृति पुरस्कार	1993	अनुसूचित जाति विकास परिषद, नई दिल्ली |
2. पत्रकारिता एवार्ड	1993	पीपुल्स विक्टरी, नार्थ एवेन्यु, नई दिल्ली |
3. डॉ. अम्बेड़कर राष्ट्रीय पुरस्कार	1998	भारतीय दलित साहित्य आकादमी, टैगोर पार्क, नई दिल्ली |
4. वाणिज्य हिंदी ग्रंथ पुरस्कार (आम आदमी की आय: एक वाणिज्यिक सर्वेक्षण)	1995-96	वाणिज्य मंत्रालय, (भारत सरकार) नई दिल्ली |
5. बिरसा मुंड़ा सम्मान	2003	रमणिका फौंडेशन, ए-221, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली |
6. डॉ. अम्बेड़कर इंटरनेशनल मिशन	2004	डॉ. अम्बेड़कर इंटरनेशनल मिशन 1078,5735 डलवेटटी ड्राइव एन. डब्ल्यू. कालगरी, एन. बी. कनाडा |
7. गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार	2006	माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार के द्वारा (केंद्रिय हिंदी संस्थान) भारत सरकार आगरा (उ. प्र.) |

❖ **निष्कर्ष :**

मोहनदास नैमिशराय जी का व्यक्तित्व को देखने पर हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि नैमिशराय जी का जन्म 5 सितंबर, 1949 में मेरठ शहर में हुआ | उनका जन्म एक गरीब परिवार में चमार जाति में हुआ | उनको अपनी माँ का अभाव रहा है | लेकिन ताई माँ ने उसकी जगह लेने का प्रयास किया है | उन्हें बचपन में प्यार से ज्यादा सहानुभूति मिलती थी | उनका बचपन विषम परिस्थितियों में बीता है | उनमें शिक्षा के प्रति बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धिमत्ता परिलक्षित होती है | उनको अध्यापकों की प्रताड़ना एवं जुल्म का सामना करते हुए शिक्षा पूरी करनी पड़ी |

साहित्यकार नैमिशराय जी के व्यक्तित्व की तरह कृतित्व भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अतुलनीय है | उनका पूरा साहित्य अनुभूतिपरक एवं यथार्थवादी है | वे अनेक पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए हैं | उन्होंने सामाजिक गतिविधियाँ, शैक्षणिक गतिविधियाँ, शोध एवं पाठ्यपुस्तकों में बहुमोल योगदान दिया है | उन्होंने अपने साहेत्य में दलितों की समस्याओं को उजागर किया है तथा उनमें चेतना जगाने का प्रयास किया है | उन्होंने विभिन्न संम्मेलनों में शोध पत्रों को प्रस्तुत किया है |

अत: कहना सही होगा कि शोपित, पीड़ित, उपेक्षित तथा मनुष्य होते हुए भी जानवरों से भी बदतर जिंदगी जीनेवाले दलितों को वाणी देने का प्रयास श्रेष्ठ साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय ने किया है | वे अपने साहेत्य के माध्यम से दलितों को न्याय देने में पूरी तरह से सफल हुए हैं |